मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त खड़ी बोली को प्रतिष्ठा प्रदान करनेवाले महत्त्वपूर्ण कवि हैं। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव, जिला झाँसी में 1886 ई. में हुआ। आपका परिवार समृद्ध, गुणज्ञ, विद्याव्यसनी एवं भगवत् भक्त था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई। हाईस्कूल तक की शिक्षा झाँसी में हुई। गुप्त जी मूल रूप में रामभक्त कवि माने जाते हैं। पवित्रता, नैतिकता, मर्यादा और उच्च मानवीय मूल्यों की रक्षा आपके काव्य की प्रमुख विशेषता रही है। 'रंग में भंग', 'भारत-भारती' आपकी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना रही है। साकेत, यशोधरा एवं विष्णुप्रिया आदि काव्य रचनाओं के द्वारा आपने अनेक उपेक्षित स्त्री पात्रों को न्याय देने का प्रयत्न किया है। 1952 से 1964 तक आप राज्यसभा के सदस्य रहे। मंगलाप्रसाद पारितोषिक, साहित्य वाचस्पति एवं पद्मभूषण उपाधि से आपको सम्मानित किया गया है।

निधन : 1963

कविता सार

गौतम के गृहत्याग के बाद यशोधरा को जो दुख हुआ उसी की अभिव्यक्ति इस कविता में हुई है। गौतम सिद्धि प्राप्त करने के लिए घर छोड़कर चले गए हैं तब यशोधरा कहती हैं—अगर वे मुझसे कहकर जाते तो भी मैं उन्हें नहीं रोकती। वे चोरी-चोरी चले गए इसी बात का मुझे दुख है। मैंने उनकी चाहत को ही अपनी चाहत माना है लेकिन उन्होंने मुझे नहीं पहचाना। भारत की नारियाँ अपने प्रिय को स्वयं रण में भेज देती हैं; यही भारतीय नारी की परंपरा है लेकिन इस प्रकार भेजने का भाग्य भी यशोधरा को प्राप्त नहीं हो सका। यशोधरा उन्हें दोष नहीं देखना चाहती। उसकी कामना है कि वे सिद्धि प्राप्त कर लौटें तब भी वह उनका स्वागत ही करेगी।

सखि वे मुझसे कह कर जाते

सिद्धि हेतु स्वामी गए, यह गौरव की बात;
पर चोरी-चोरी गए, यही बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?

मुझको बहुत उन्होंने माना
फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसी को जाना
जो वे मन में लाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में—
क्षात्र-धर्म के नाते
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किसपर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा;
रहें स्मरण ही आते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते?

गए तरस ही खाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

जायें, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से?
आज अधिक वे भाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

गए, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हें पावेंगे,
पर क्या गाते-गाते?
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।